UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

International Research Journal Registered & Recognized Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief

Mr.Arun B. Godam

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College Degloor Dist.Nanded

www.rjournals.co.in

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly
Issue IX Vol III , May 2017
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Research Refereed Multidiciplanary Journal

Editor In Chief
Mr. Arun B. Godam

Special Editor
Prof. Jadhav Baburao B.
Dept. of Political Sci.
Bapusaheb Ekambekar Mahavidalaya , Udgir

ISSUE IX Volume III (Half Yearly) May. To Oct . 2017
Published on May 2017

Editorial Office Address :
Khadgaon Road, Kapil Nagar, Latur, Dist. Latur 413512 (M.S.) India

Contact- 8149668999
Email-
hitechresearch11@gmail.com

SHAURYA PUBLICATION Latur

Publisher
Shaury Publication
Kapil Nagar, Latur
Contact- 8149668999

Price:- Rs. 300

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Chitta Ranjan Panda
P.G. Deptt. Of Odia
Shailabala Women's Autonomous College
Cuttack – (Orissa)

Dr. U.T. Gaikwad
Dept. of Geography,
Smt. S. D. M. College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

Maimanat Jahan Ara
Head, Dept of Political Science,
Sir Sayyed College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Dr M.U. Yusuf
Dept of Commerce,
Sir Sayyed College,
Auranbadad, Dist. Aurangabad

Dr. Hanumant Mane
R.Guide & Head,
Dept. of Marathi,
Shivchatrapati College,
Kalam, Dist. Osmanabad(M.S.)

B.J. Hirve
Dept. of botany
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed. (M.S.)

Dr. Prain Diddeshwar Shete
Dept. of Zoology,
Maharashtra Udaygiri Mahavidyalaya, Udgir,
Dist. Latur

Dr U.V.Panchal
H.O.D, Dept of Commerce,
Deogiri College,
Aurangabad, Dist. Aurangabad

Pro. S.B. Karande
Dept. of Economics,
Shri Bhausaheb Vartak College,
Borivali (W), Dist. Mumbai.

Dr. N.J. Waghmare
Research Guide & Head,
Dept. of Pali,
Govt. Sanatketar College,
Shivani, (M.P.)

www.rjournals.co.in

Scanned by CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue IX Vol III , May 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

19	स्वातंत्र्योत्तर राजकीय कांदबरी	श्री. विभुते शिवहार प्रकाश	67
20	"पोवाडा या शाहिरी काव्याचे स्वरूप"	प्रा. डॉ. श्रीहरी चव्हाण	69
21	'सभापती' व 'काला पहाड' कादंब-यांचा तुलनात्मक अभ्यास	श्री. परमेश्वर वाल्मिक दहिफळे	72
22	भारतीय प्रसार माध्यमे आणि ग्रामीण विकास	प्रा.डॉ.संतोष चंपती हंकारे	75
23	अहमदपूर व चाकूर तालुक्यातील ज्वारी पीक प्रारुपाचा भौगोलिक अभ्यास	प्रा.डॉ.यु.बी.सोनुले प्रा.एम.एस.मुरुडकर	78
24	लिंगायतों का केंद्र सोलापूर : एक विश्लेषणात्मक अध्ययण	डॉ. लक्षटे रत्नाकर बाबुराव	82
25	कायदा व सुव्यवस्था आणि केंद्र शासन	प्रा. डॉ. सयद कुरेशाबी नजीरसाहेब	86
26	सार्वजनिक आरोग्य आणि शाश्वत विकास	प्रा.डॉ.तिडके केशव दत्तराव	89
27	"सुशासन आणि भारतातील सुशासनाचा विकास"	हेळंबे हनमंत बालाजी	91
28	लातूर जिल्ह्यातील विविध जलसिंचन साधनाद्वारे सिंचनाखालील क्षेत्र - एक भौगोलिक अभ्यास	प्रा. चोचंडे आर. यु.	94
29	समाजातील वास्तविक समस्यावरील उपाय- आंदोलन	डॉ. व्ही. एस. इंगळे	100
30	मानवी हक्क : महिला	प्रा.आर.बी.काळे	104

Scanned by CamScanner

DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue IX Vol III \ May 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

लिंगायतों का केंद्र सोलापूर : एक विश्लेषणात्मक अध्ययण

डॉ. लक्षटे रत्नाकर बाबुराव
राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष, देगलूर महाविद्यालय,देगलूर , ता. देगलूर जि. नांदेड, महाराष्ट्र.

---------(24) ---

महाराष्ट्र के लिंगायत समाज का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है की, पश्चिम महाराष्ट्र मे स्थित सोलापूर जिला लिंगायतो का केंद्र है। सोलापूर को लिंगायतों का केंद्र क्यों कहते है? इसके कारणों की जाँच कर उसे यहाँ स्पष्ट किया है।

वर्तमान सोलापूर जिले मे दक्षिण सोलापूर,उत्तर सोलापूर, अक्कलकोट, माढा, पंढरपूर, मंगळवेढा, माळशिरस, करमाळा यह तालूके है। इन सभी तालूकों कों मिलाकर कुल लिंगायत समाज की आबादी 12 लाख है। उपरी सभी तालूके महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावक्षेत्र है। 12 वी सदी मे महात्मा बसवण्णा ने सरदार बिज्जल के दरबार मे अनेक प्रशासानिक पदों पर काम किया था। इन काम के वजह से वे सोलापूर जिले का पूरा हिस्सा घुम चुके है। साथ ही यही पर उन्हे उनके विचारों के अनूयायी मिले थे। जिसमे सिध्दरामेश्वर इनका नाम प्रमुख है। जो सोलापुर के ही थे। सिध्दरामेश्वर, महात्मा बसवण्णा, अक्कनागलांबिका, बसवपत्नी – गंगाबिंका, निलांबिका आदि के लिंगायत विचारधाराने इस भूमि को सिंचकर विचारो के प्रसार के लिए उपजाऊ बनाया है। गजेश मसनय्या यह शरण अक्कलकोट के थे। मसनय्या की पत्नी पूण्य स्त्री काळव्वा, हविनाळ मलय्या आदि समेत सोलापूर जिले मे अनेक शरण स्थल है। सोलापूर मे सिध्दरामेश्वर मन्दीर, मंगळवेढा मे माचनूर, मंगळवेढा, बुहानपुर, बोराळे अक्कलकोट आदि 12 वी सदी से लेकर आजतक अनेक प्रमुख लिंगायत वीरशैव साहित्यिक सोलापूर से निर्माण हुए है, जिन्होंने लिंगायत विचारधारा का प्रचार – प्रसार किया। बसवादी शरणों के चरित्र एंव वचनों पर लिखान कर उन्हे प्रकाशित किया। इन साहित्योको मे महिला साहित्यिक सौ. संगण्वाबाई मडकी, डॉ. जयदेवीताई लिगाडे, सौ. शशिकलाताई मडकी, सौ. स्वरूपाताई बिराजदार, सौ.मधुबाला लिगाडे आदि। साथ ही डॉ.राजशेखर हिरेमठ, डॉ.मिमाशंकर बिराजदार, प्राचार्य शशिकला हलकुडे, डॉ.राजेश्वर येळीकर, डॉ.मंगनाळे व्ही.एस, डॉ.बी.बी.पूजारी डॉ.गुरूलिंगप्पा धब्बाले, चनवीर मद्रेश्वर मठ, गिरिश जकापूरे, डॉ.गुरुसिध्दय्या स्वामी, प्रा.आबासाहेब देशमुख,शाहीर जंगम, डॉ.शे.द.पसारकर, डॉ.सुर्यकांत घुंगरे, प्रा.डॉ.शोभा कराळे, प्रा. रमाकांत पंतुलवार आदि। इनमे से अनेक संशोधक, लेखक, साहित्यिक है। सभी ने कन्नड, मराठी, कन्नड का मराठी अनुवाद कर अपना साहित्य प्रकाशित किया है।

महाराष्ट्र में लिंगायतों के जितने भी मठ है उनमे से अधिक मठ सोलापूर जिले मे है। बार्शी तालुके मे 12 मठ है। अक्कलकोट तालुका मे मे भी मठ है। तो कुछ सोलापूर शहर, माढा, करमाळा, पंढरपूर और माळशिरस तालुका मे है। मंगळवेढा तालुका के सिध्दनकेरी मठ मे बसवण्णा के पुत्र बाल संगय्या का जन्म हुआ ऐसी जानकारी अनुसन्धान के दौरान प्राप्त हुई।

सोलापूर जिले मे लिंगायत समाज के अधिक स्वतन्त्र सेनानी हो गये। जिनमे प्रमुख नाम मल्लप्पा धनशेट्टी है। साथ ही अक्कलकोट तालुका में वळसंग नामक गांव में महात्मा गांधीजी आए थे। वीरूपाक्ष शिवदारे, बाबुराव चाकोते अनिरप्पा गुरूलिंगप्पा भरकडे, अमृतराव पाटील, बाबासाहेब वारद, भजगे,बशेट्टी, अप्पासाहेब वारद ऐसे अनेक नाम है जो स्वतन्त्र सेनानी थे।

राजनीतिक लोकप्रतिनिधि की दृष्टि से देखा जाए तो आबादी के तुलना मे लिंगायतों का समानधानकारक राजनीतिक प्रतिनिधित्व पुरे महाराष्ट्र मे नही रहा है। जितना भी कुछ राजनीतिक प्रतिनिधित्व हमे दिखाई देता है वो अधिकतर सोलापूर जिले से ही है। उसमे एम. बी. काडादी यह संसद सदस्य थे। नागाप्पा काडादी, वि.ग.शिवदाळे इनका शक्कर कारखाना, सुत गिरणी, मार्केट कमिटी, शिक्षा संस्था, वस्तीगृह आदी के स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान है। इनसे भी पूर्व आप्पासाहेब वारद यह एक सोलापूर के लिंगायतों में बहुत बडा नाम है। यह एक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एंव सांस्कृतिक दृष्टी से विशालंकाय व्यक्तिमत्व था। जिनकी अखिल भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना में अहम् भूमिका रही है।

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY
DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly
Issue IX Vol III , May 2017 | UGC Approved Sr. No. 64310 | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 2.143

लोकमान्य टिळक, गोपाल कृष्ण गोखले, बिपिनचंद्र पाल, न.चि.केलकर इन सभी राजनेता से उनकी पहचान और उनके साथ काम किया है।[60] उनके सुपुत्र बाबासाहेब वारद जो सोलापूर के नगराध्यक्ष थे। विरूपाक्ष गुरप्पा शिवदारे, गुरुनाथ पाटील, महादेव पाटील, विश्वनाथ चाकोते, सिध्दराम म्हेत्रे (भुतपुर्व गृहराज्य मंत्री), सिद्रामप्पा पाटील, महादेव पाटील, बाबासाहेब तनवडे, सौ. पार्वतीबाई मलगौंडा (भूतपुर्व शिक्षामंत्री) विजयकुमार देशमुख (राज्यमंत्री) दिलिप सोपल (भुतपुर्व कॅबिनेट मंत्री), सुशिलकुमार शिंदे (लिंगायत कक्कय्या ढोर माजी गृहमंत्री भारत सरकार) मंगळवेढा विधानसभा मतदारसंघ पिछले 25 साल से अनुसुचित जाति के लिए राखीव रहने से यहाँ लिंगायतों का मतदाता प्रमाण अधिक रहकर भी लिंगायत आमदार नही बना। यहाँ के आमदार प्रा. लक्ष्मणराव ढोबले जी का कहना है की, मेरी राजनीतिक जीवन को संवारने मे लिंगायत समाज का अधिक एंव सक्रिय सहकार्य रहा है।

सोलापूर शहर से लेकर जिलों के अनेक इलाको में बसवण्णा के मन्दिर है। सोलापूर जिले से अधिक बसवण्णा मन्दिर महाराष्ट्र के किसी भी जिले मे नही है।

सोलापूर शहर से लेकर सभी तालुको मे स्थानिक स्वराज्य संस्था के अनेक संस्था मे जैसे की ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, जिला परिषद, नगरपालिका एंव महानगरपालिका मे लिंगायतों का प्राबल्य है। बार्शी मे अनेक सालो से लिंगायत समाज का ही प्रतिनिधी नगराध्यक्ष बनता है। सोलापूर मे आप्पासाहेब काडादी (भुतपुर्व नगराध्यक्ष), विश्वनाथ बनशेट्टी, विश्वनाथ चाकोते, बडंप्पा मुनाले आदि महापौर रहे है, अन्य भी कुछ नाम हो सकते है, जिन्होंने सोलापूर महानगरपालिका का महापौर पद का कारोभार संभाला है। कुछ गांवो में पिछले अनेक सालों से लिंगायत समाज का ही व्यक्ति सरपंच बनता है। ऐसी स्थिति अधिक तर सोलापूर तालुका, अक्कलकोट तालुका, बार्शी तालुका में अधिक है। तो पंढरपूर, माढा, माळशिरस तालुका मे यह प्रमाण कुछ कम है। साथ ही पंचायत समिती, जिला परिषद, नगरपालिका में सभापती एंव नगराध्यक्ष पद पर लिंगायत व्यक्ति का चयन होता है।

सोलापूर जिले के लिंगायत लोगो का सहकार क्षेत्र मे भी अधिक योगदान रहा है। महाराष्ट्र मे ऐसे दो ही जिले है जहा पर सहकार क्षेत्र मे लिंगायत व्यक्ति की भुमिका अहम रही है। एक सोलापूर दुसरा कोल्हापूर और इसके बाद सांगली जिले का नंबर आता है। सोलापूर को सहकार क्षेत्र मे आप्पासाहेब वारदजी ने प्रशंसनिय काम किया है। 18 मार्च 1898 को कपडा मिल शुरू की, इसके बारे मे टाईम्स ऑफ इंडिया नामक वृत्तपत्र ने कहा है, उस समय 24 घंटे चलनेवाली देश की यह पहली कपडा मिल है। मुम्बई प्रान्त मे सबसे पहला शक्कर कारखाना आप्पासाहब वारदजी ने प्रारंभ किया। 1909 में ब्रिटिशोने आप्पासाहब वारद को रावसाहब यह उपाधि दी। ऐसे वे एक मात्र सोलापूर के लिंगायत व्यक्ति थे। साथ ही जिनका समावेश विक्टोरिया राणी के विक्टोरिया ग्रुप मे हुआ था। जो ग्रुप उस वक्त के देश के 20 अमिर व्यक्ति का था। आप्पासाहब वारदजी ने वारद व्यापारी हायस्कुल की स्थापना की।[62] मेरे खयाल से यह पहला प्रयत्न होगा जीसके माध्यम से युवा पीढि को व्यापार की शिक्षा मिलती होगी।

सिध्देश्वर सहकारी शक्कर कारखाना, सोलापूर, स्वामी समर्थ सहकारी शक्कर कारखाना अक्कलकोट, मातोश्री लक्ष्मीबाई म्हेत्रे सहकारी शक्कर कारखाना, रूदेवाडी, सिध्देश्वर सहकारी बॅंक सोलापूर जिसकी अनेक शाखाए है। महेश अर्बन को–ऑप.बॅंक लि. सोलापूर, इसकी भी महाराष्ट्र के अनेक जिलो मे शाखाए है। सोलापूर मे वीरशैव पतसंस्था मर्यादित है। अक्कलकोट मे स्वामी विवेकानंद पथसंस्था है जिसके सचिन कल्याण शेट्टी प्रमुख है। साथ ही सोलापूर जिले के ग्रामीण इलाको मे दुध–डेअरी के अनेक प्रकल्प लिंगायत समाज के व्यक्ति चलाते है। स्वामी समर्थ सहकारी सुत गिरणी वलसंग नामक गांव मे है। मंगळवेढा मे दामाजी सहकारी शक्कर कारखाने के शशिकांत बुगडे पूर्व चेअरमन थे, वर्तमान मे केदार सर और महमाने मॅडम संचालक है।

सोलापूर जिले के लिंगायत समाज ने शिक्षा क्षेत्र मे भी प्रशंसनिय काम किया है। जो महाराष्ट्र के अधिक तर जिलों मे नही हुआ है। विरूपाक्ष शिवदार के बेटे राजशेखर शिवदारे ने दक्षिण सोलापूर शिक्षा संस्था की स्थापना कर उसके अंतर्गत

Scanned by CamScanner

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist. Nanded

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue IX Vol III , May 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

प्राथमिक,माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, ज्युनिअर, सिनिअर, फार्मसी महाविद्यालय शुरू किया। कर्नाटक लिंगायत एज्युकेशन संस्था के अंतर्गत ही प्रारंभिक अवस्था में संगमेश्वर शिक्षा संस्था की स्थापना हुई थी। आज यह एक स्वतंत्र महाविद्यालय है जिसे संगमेश्वर महाविद्यालय के नाम से पहचानते है। सिध्देश्वर देवस्थान ट्रस्ट की ओर से महिला तंत्र महाविद्यालय जिसके प्रधानाचार्य डॉ. गजानन धरने है। आरकीड इंजिनिअरींग कॉलेज, सोलापूर, ए.जी.पाटील इंजिनिअरींग कॉलेज, सोलापूर, श्रीरामलिंगेश्वर कॉलेज तीर्थ तालुका दक्षिण सोलापूर, साथ ही चपलगाव, कवटले, कोरोली, बोराल, अरली, हन्नूर, मेहंदर्गी, दुधनी, अक्कलकोट, बार्शी इन सभी जगहों पर अनेक ज्युनिअर कॉलेज की स्थापना लिंगायत व्यक्तिने ही की है। अक्कलकोट तालुके के मंगरूल नामक गाव मे कर्नाटक लिंगायत एज्युकेशन संस्था की एक शाखा है जहॉं पर पहिले से लेके 12 वी तक के शिक्षा की सुविधा है। अक्कलकोट तालुके में करजगी–बसवराज शिक्षण संस्था, नानानसूर–प्रचंडे हायस्कुल, गौडगाव–गुरू सिध्देश्वर कल्याण केंद, वागदरी–परमेश्वर विद्यावर्धक शिक्षण प्रसारक मंडल, दुधणी–परमशेट्टी हायस्कुल– मैंदर्गी–शिवपलेश्वर शिक्षण संस्था, जेउर–काशी विश्वेश्वर शिक्षण संस्था जो शिवशरण खेडगी की है। मंगलवेढा तालुका में दामाजी महाविद्यालय मे शैलेश हरनाले,शरणप्पा माली सभासद है। 05 से 10 विद्यामन्दीर लिंगायत व्यक्ति ने स्थापित किए है। दामाजी हायस्कुल बोराले हायस्कुल, आरली हायस्कुल, इनमे लिंगायतों का योगदान है। आरली हायस्कुल, के अध्यक्ष भाले है। इससे भी अधिक प्रमाण में शिक्षा क्षेत्र मे लिंगायतों का योगदान है। इन संस्था की स्थापना कर लिंगायतों ने सोलापूर जिले के सभी जाति के लोगों के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिए। इससे लिंगायत समाज के व्यक्ति को रोजगार मिला। जिससे इनके आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। शिक्षा क्षेत्र के विकास का प्रारंभ 27 सितंम्बर 1895 को लडकियों के लिए सरस्वती मन्दीर नामक पाठशाला का प्रारंभ कर आप्पासाहब वारदने किया था। आप्पासाहब वारदने सोलापूर, परली, हुमनाबाद, विजापूर में अपने खर्चेसे वारद संस्कृत पाठशाला की स्थापना की थी। कर्नाटक लिंगायत एज्युकेशन संस्था के आप्पासाहब वारद संस्थापक सदस्य थे। इस देश का पहला लिंगायत व्यक्ति बॅरिस्टर बना जो सोलापूर का ही था जिसका नाम शिवलिंगप्पा होसली था। इसके पिछे आप्पासाहब वारद की प्रेरणा थी। साथ ही कन्नड भाषा में शिक्षा की सुविधा हेतू महिला ज्ञान मन्दीर की स्थापना सौ. संगवाबाई मडकी ने की, जो राजशेखर मडकी की पत्नी थी। आप्पासाहब वारदने हरिजनों के लिए स्कुल बनवाया था।

सोलापूर जिले के सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक विकास में लिंगायतों का महत्वपूर्ण योगदान इतिहास, वर्तमान काल में है, भविष्य काल में भी रहेगा। आज सोलापूर महानगरपालिका का पूरा प्रशासन जिस ईमारत में चलता है, जिसे इंद्रभवन कहते है वो आप्पासाहब वारद नामक लिंगायत व्यक्ति ने ही बनवाई थी। जिसकी तुलना आग्रा के ताजमहल से की जाति हैं। सोलापूर के शरण सिध्दरामेश्वर ने 12 सदी में 68 जगहों पर लिंग की स्थापना की, साथ ही एक बडे तालाब का निर्माण कर लोगों के पिने के पानी की व्यवस्था की। आज का सिध्दरामेश्वर मन्दिर सोलापूर के अनेक लिंगायतों और अन्यों के श्रध्दा का स्थान है। सिध्दरामेश्वर ने ही संत ज्ञानेश्वर के माता–पिता को पंढरपूर के विठुल–रूक्मीनी का दर्शन करवाया था। संयुक्त महाराष्ट्र समिती एंव आंदोलन में लिंगायतो का सक्रिय सहभाग रहा है। सामुहिक विवाह का प्रारंभ सिध्दरामेश्वर ने किया। पतंजली योग सुत्र का भी अभ्यास सिध्दरामेश्वर ने किया था।

लिंगायत समाज का संघटन प्रभावी एंव सशक्त हो इसके लिए अप्पासाहब वारद ने आखिल भारतीय वीरशैव महासभा की स्थापना में अपना योगदान दिया है। सोलापूर में महात्मा बसवण्णा, शरणों के वचन, उनकी जीवन, चरित्र का अध्ययन हो, वीरशैव या लिंगायत दर्शन का अध्ययन हो इसके लिए श्रीमद्वीरशैव धर्मग्रंथ माला सोलापूर नामक संस्था की स्थापना कर अपने खर्चे से ग्रंथो का प्रकाशन करनेवाला पहले आयोजक अप्पासाहब वारद थे। वीरशैव महासभा के अधिवेशन सोलापूर में करवाने में भी अप्पासाहब वारद की भूमिका अहम रही है। रिपन हॉल, नॉर्थकोर्ट टेनिस हॉल, व्यायाम शाला, वारद मिल, वारद गुड फॅक्टरी, वारद फार्महाउस, वारद गेस्ट हाऊस आदि का भी निर्माण अप्पासाहब वारदने किया है।[63] महात्मा बसवण्णा के 'हा आमुचा हा आमुचा' इस वचन को वास्तव में लानेवाले अप्पासाहब वारद थे। अप्पासाहब वारद जी की यही परम्परा उनके बेटे बाबासाहब वारद ने आगे चलाई। अप्पासाहब वारद के दामाद राजशेखर मडकी का योगदान सक्रिय रहा

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

Scanned by CamScanner